Anusanadhan: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
Volume 4, Issue 1&2 - 2019, Pg. No. 1-4
Peer Reviewed Journal

Research Article

भारत की विदेश नीति के अंतर्गत अन्य देशों के साथ सम्बंध

राजकौर

राजीव अकादमी फॉर टीचर एजुकेशन, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत।
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.201907

I N F O

E-mail Id:
rajkaurjhajhariya@gmail.com
Date of Submission: 13-06-2019
Date of Acceptance: 07-07-2019

सारांश

किसी भी देश की विदेश नीति इतिहास से गहरा सम्बन्ध रखती है, भारत इसका अपवाद नहीं है। भारतीय विदेश नीति भी ऐतिहासिक विरासत के रूप में अनेक तथ्यों को समेटे हुए है, जो प्राचीन काल से लेकर इसके स्वतन्त्रता आंदोलन से उपजे थें। शान्तिपूर्ण सह–अस्तित्व व विश्वशान्ति का विचार हजारों वर्षों से उस चिन्तन का परिणाम है जिसे महात्मा बुद्ध व महात्मा गाँधी जैसे विचारकों ने प्रस्तुत किया था। इसी तरह भारत की विदेश नीति में उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध महान राष्ट्रीय आन्दोलन की उपज है। वर्तमान परिदृश्य में भारत के अधिकतर देशों के साथ औपचारिक राजनायिक संबंध है। प्राचील काल में भारत के समस्त विश्व से व्यापारिक, सांस्कृति व धार्मिक संबंध रहे तथा स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अधिकांश देशों के साथ सौहाद्रपूर्ण संबंध बनाए रखे। वैश्विक मंचों पर भारत सदैव सक्रिय रहा तथा 1990 के बाद उदारीकरण की नीति से भारत ने आर्थिक रूप से भी प्रभावित किया। सामरिक तौर पर भारत ने अपनी शक्ति को बनाए रखा है एवं विश्व शान्ति में यथासम्भव योगदान देता रहा। पाकिस्तान व चीन के साथ भारत के सम्बन्ध तनावपूर्ण अवश्य है किन्तु रूस के साथ सामरिक संबंधों के अलावा इजरायल व फ्रांस के साथ विस्तृत रक्षा संबंध भी है।

मुख्य बिन्दु: विदेश नीति, विकसित देश, विकासशील देश, पडोसी देश, राजनायिक संबंध, व्यापारिक संबंध, सांस्कृति संबंध, धार्मिक संबंध

प्रस्तावना

विकसित देशों के साथ भारत के सबंधों पर यदि विचार किया जाए तो रूस व अमेरिका का नाम प्रमुखता से आएगा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद से 20वीं सदी के अन्त तक भारत की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण धूरी सोवियत संघ रूस के साथ इसके घनिष्ठ संबंध रहें। यद्यपि शीतयुद्ध के प्रारम्भिक वर्षों में भारत–रूस संबंध शुष्क रहे लेकिन कालांतर में यह प्रगाढ़ हुए, चूंकि एक ओर अमेरिका पाक को जरूरत से ज्यादा बढ़ावा दे रहा था अतः भारत का रूस की तरफ सुझाव व्यावहारिक था। अतः आजादी के बाद से यदि देखा जाए, भारत–रूस सदैव

से ही मित्रतापूर्ण संबंध रखते है। इस मित्रता को 70 वर्षों से अधिक समय हो चुका है और यह वर्तमान में भी जारी है। अधिकतर मामलों में रूस दुनिया की परवाह किए बिना सदैव ही भारत से अपनी मित्रता निभाता रहा है। अन्तर्राष्ट्रीय मंचों पर रूस ने सदैव भारत का समर्थन किया है तथा कई महत्वपूर्ण मुद्दों में अपने वीटो अधिकार का प्रयोग भारत के पक्ष में सुरक्षा परिषद में किया तथा कश्मीर मुद्दे पर भी सदैव भारत का पक्ष लिया। वर्तमान में भी रूस भारत को रक्षा, प्रौद्योगिकी, अन्तरिक्ष, व्यापार, हथियार आदि क्षेत्रों में पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहा है। हाल में भारतीय प्रधानमंत्री की सूदूर पूर्वी रूस के व्लादिवोस्तोक की यात्रा तथा इस दौरान कई द्विपक्षीय समझौतों पर हस्ताक्षर हुए तथा भारत की टाटा पावर, कोल इण्डिया, ओएनजीएस विदेश, गेल (इण्डिया) जैसी कम्पनियाँ यहाँ ऊर्जा के क्षेत्र में निवेश कर रही है। यह भारत की फार ईस्ट पॉलिसी का हिस्सा है।

विकसित देशों के साथ भारत के सम्बंध

भारत–रूस की मित्रता निःसंदेह अति महत्वपूर्ण रही है, किन्तु यदि दुनिया की महाशक्ति अमेरिका की यदि बात की जाए तो भारत–यूएसए के रिश्ते प्रारम्भ से इतने अच्छे नही रहे है, जिसका

Copyright (c) 2019: Advanced Research Publications

मुख्य कारण अमेरिका द्वारा पाकिस्तान को आजादी के बाद से दी जाने वाले अनावश्यक महत्व है, 1965 के युद्ध तथा 1971 में भी अमेरिका ने पाक का पक्ष लिया व उसे सहायता दी, उसे हथियारों की आपूर्ति की जिसका प्रयोग उसके भारत के विरूद्ध ही किया। लेकिन वर्तमान संदर्भ में दोनों देशो (भारत–यूएसए) के संबंधों में सकारात्मक बदलाव देखने को मिले है। हाल में प्रधानमंत्री मोदी की अमेरिका के टेक्सास राज्य के ह्यूस्टन की यात्रा की जहाँ उन्होनें 30,000 भारतीय मूल के लोगों को सम्बोधित किया तथा इस दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति की वहाँ उपस्थिति भारत की मजबूत स्थिति को परिलक्षित करती है।

विकसित देशों की सूची में यदि भारत–यूरोप के देशों की चर्चा की जाए तो यह कहा जा सकता है कि भारत लगभग 200 वर्षों तक ब्रिटेन का गुलाम रहा अतः अन्य यूरोपीय देशों के साथ भी उसके संबंध घनिष्ठ नही रहे। आजादी के बाद भारत की स्थिति यूरोपीय देशों की नजरों में एक अल्पविकसित या विकासशील देश की थी ओर 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद तो ज्यादातर यूरोपीय देशों को चीन अधिक आकर्षित लग रहा था लेकिन समय के साथ राजनैतिक संबंध बदल जाते है। आज यूरोपीयन युनियन में 27 सदस्य देश है, जिनमें से कई देशों के साथ भारत के व्यापारिक संबंध है। आज हमारे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का 1/4 हिस्सा यूरोपीय समुदाय के सदस्य देशों के साथ जुड़ा है। 2017–18 तक यूरोप के साथ भारत का व्यापार 130.1 अरब डॉलर था, जिसके निर्यात व आयात दोनों में दोहरे अंकों में वृद्धि दर्ज की गई। इसके अलावा हाल में यूरोपीय संघ ने व्यापार, निवेश, रक्षा, सुरक्षा संबंधों और आतंकवाद से निपटने सहित कई प्रमुख क्षेत्रों में भारत के साथ सम्बन्धो को मजबूत बनाने के लिए रणनीतिक पत्र पेश किया है, जिस पर यूरोपीय परिशद् व यूरोपीय संसद में चर्चा की जाएगी।

इसके साथ ही यदि भारत–ऑस्ट्रेलिया संबंधो की बात की जाए तो भारत के स्वतन्त्र होने से पूर्व भारत व ऑस्ट्रेलिया दोनो ब्रिटानी साम्राज्य के अंग थे, वर्तमान में दोनो राष्ट्रमण्डल देश है तथा इसी के प्रभावस्वरूप दोनों देशों ने क्रिकेट व अंग्रेजी भाषा प्रभावशाली है। व्यापारिक क्षेत्र में भी भारत–ऑस्ट्रेलिया के रिश्ते मजबूत रहे है। वर्ष 2016 में ऑस्ट्रेलिया के साथ भारत का व्यापार लगभग 15.6 बिलियन डॉलर था।

विकासशील देशों के साथ भारत के सम्बंध

विकसित देशों के साथ विकासशील देशो को लेकर भारत की क्या रणनीति रही इसका विशलेषण करना भी महत्वपूर्ण है। भारत–अफ्रीकी संबंध हजारो वर्ष पुराने व ऐतिहासिक रहे है। आजादी के गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने दोनों देशों के संबंधो को मजबूत बनाया। इससे पूर्व प्राचीन काल में भी कई अफ्रीकी भारत आए तथा औपनिवेशिक काल में भारतीय मजदूर अफ्रीका जाकर मजदूरी करते थे। वर्तमान परिप्रेक्ष्य की बात की जाए राजनायिक और वाणिज्यिक प्रतिनिधित्व के विस्तार के साथ भारत ने अधिकांश अफ्रीकी देशों से संबंध विकसित कर लिए है। भारत–अफ्रीकी व्यापार आज 62.66 अरब अमरीकी डॉलर तक पहुंच गया है, जिससे भारत अफ्रीका का चौथा सबसे बड़ा भागीदार बन गया है। इसी के साथ मध्य पूर्व के देशों के साथ भारत के संबंधों पर भी गौर फरमाया जाना चाहिए।

मध्य पूर्व के देश जिसे आज अरब जगत समझा जाता है, भारत के साथ इस क्षेत्र के संबंध सिंधु के सुमेरियन, बेबिलोन तक रहे है। औपनिवेशक काल में इस क्षेत्र का भारत ने कोई सामरिक महत्व नही समझा। जबकि यूरोपियो के आगमन से पूर्व भारत पर जितने भी आक्रमण हुए वह स्थान मार्ग से खेबर, बोलन दर्रे से ही हुए जिसने इस क्षेत्र को भारत से जोड़े रखा। इस क्षेत्र के कट्टर रूढ़िवादी देशों की तुलना में आजादी के बाद भारत के राजनयिक संबंध इस क्षेत्र के उन देशों के साथ अधिक सहज और मधुर रहे जो या तो गुटनिरपेक्षता से जुड़े रहे या समाजवादी सोवियत संघ के मित्र थे। भारत के लिए यदि ऊर्जा क्षेत्र की बात की जाए तो पश्चिम एशिया या अरब राज्य बेहद महत्वपूर्ण है, जिनसे इसे तेल की आपूर्ति होती है। वर्तमान संदर्भ की यदि बात करे तो अमरीकी दबाब में आकर भारत ने इराक से तेल आयात बंद किया जिससे की इराक के साथ संबंधो पर बुरा प्रभाव पड़ा। वहीं दूसरी ओर हाल के दिनों की प्रधानमंत्री जी की बहरीन व संयुक्त अरब अमेरिका की यात्रा के दौरान इन दोनों देशों ने भारत का रूपे कार्ड लॉन्च किया गया तथा प्रधानमंत्री जी को इनके देश का सर्वोच्च सम्मान दिया गया जो कि भारत के साथ इनके मजबूत रिश्ते का द्योतक है। इजरायल–फिलीस्तिन संघर्ष में सदैव भारत ने फिलिस्त्नि का समर्थन किया है, किन्तु वर्तमान में इजरायल के साथ भारत के अति महत्वपूर्ण संबंध है जो उसे रक्षा, हथियार, प्रोद्यौगिकी, कृषि, जल–प्रबन्धन के क्षत्र में सहयोग करता है।

पश्चिमी एशिया के साथ ही पूर्व की तरफ देखते हुए हम पूर्वी एशिया तथा दक्षिण पूर्वी एशिया की यदि बात करे तो भारत के साथ इस क्षेत्र के संबंध सहज और मैत्रीपूर्ण है। प्राचीनलकाल से ही इस क्षेत्र के साथ भारत के महत्वपूर्ण संबंध रहे जिनकी छाप आज भी यहाँ देखी जा सकती है। वर्तमान संदर्भ की बात करे तो भारत ने बड़े पैमाने पर आर्थिक सामरिक संबंधों को विस्तार देने के लिए तथा इस क्षेत्र में चीनी प्रभाव को कम करने के उद्देशय से 'पूर्व की ओर देखो' की नीति अपनाई है। इस नीति के तहत भारत अपने संबंध पूर्वी देशों के साथ मजबूत करने में सफल रहा है। इसके अलावा यहाँ के देशों की बात करे तो जापान के साथ भारत के संबंध हमेशा से ही मजबूत और मैत्रीपूर्ण रहे है। मलेशिया के साथ संबंध हाल के दिनों में तब बिगड़े जब मलेशिया ने संयुक्त राष्ट्र संघ में कश्मीरी मुद्दों पर पाकिस्तान का पक्ष लिया। पूर्व की ओर जापान भारत का हमेशा से ही एक मजबूत और भरोसेमन्द मित्र रहा है तथा दोनों के संबंध हमेशा से मधुर रहे है। फिलिपिंस की यदि बात करे तो हाल के दिनों की भारतीय राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद की यात्रा से दोनों देशों के मध्य संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इण्डोनेशिया के साथ भारत के संबंध दो हजार वर्ष पुराने है, अण्डमान निकोबार द्व ीप समूह के माध्यम से भारत का एक पड़ोसी देश भी है, वर्तमान में दोनों के मध्य आर्थिक, सांस्कृतिक व राजनयिक संबंध मधुर है।

जब नरसिंह राव भारत के प्रधानमंत्री थे तब उन्होंने 'पूरब की ओर देखो' का नारा दिया। जिसका उद्देश्या अब तक उपेक्षित दक्षिण–पूर्व एशिया को प्राथमिकता सूची में ऊपर लाना। राव के कार्यकाल की

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.201907

समाप्ति के बाद अगली सरकार ने भी इसी नीति पर जोर दिया। वर्तमान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी पूर्व की ओर देखो नीति को चालू रखे हुए है।

वर्तमान संदर्भ की बात की जाए तो भारत क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी का सदस्य देश है जिसमें द.पूर्व के 16 आसियान देश तथा 6 अन्य देश जिनमें आस्ट्रिलेयिा, न्यूजीलैण्ड, चीन, जापान, द.कोरिया शामिल है का सदस्य है जो इन देशों के मध्य व्यापार व आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देता है।

पडोसी देशों के साथ भारत के सम्बंध

इसी के साथ यदि भारत के पडोसी देशों के साथ संबंधो को देखे तो हम पायेगें कि जहाँ कुछ पड़ोसियों के साथ ऐतिहासिक, सांस्कृतिक मजबूत संबंध रहे है वहीं चीन व पाकिस्तान के साथ संबंध हमेशा से ही तनावपूर्ण रहे है जिससे पाकिस्तान एक प्रकार से भारत का बहुत दूर का पड़ोसी भी कहा जाता है।

अन्य देशों की तुलना में पाकिस्तान के साथ भारतीय संबंध कभी भी सामान्य नही रहे। 1947 के रक्तरंजित बंटवारे के बाद पाकिस्तान का जन्म हुआ तब से अब तक दोनों देश कई बार युद्ध लड़ चुके है, जिसमें पाकिस्तान को हर बार शिकस्त मिली। तनाव का प्रमुख मुद्दा जम्मू–कश्मीर रहा, जिसे हाल में भारत सरकार द्वारा केन्द्रशासित प्रदेश बनाए जाने से पाक के साथ संबंधों में तनातनी चरमावस्था में पहुँच गई। इसके अलावा सिक्के का दूसरा पहलू भी है, व्यापारिक रूप से पाकिस्तान भारत से कई महत्वपूर्ण वस्तुओं जिसमें दवाईयां भी शामिल है का आयातक है वहीं भारत को पाक द्वारा प्याज, कपास, फल, सीमेन्ट तथा चमड़ा का निर्यात किया जाता है। इसके अलावा दोनों देश दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन के सदस्य है।

भारत और पाकिस्तान के संबंधों का इतिहास भावनात्मक लगाव व अप्रत्याशित घटनाओं का इतिहास रहा है। इन्हीं विभिन्ताओं एवं विविधता के कारण प्रसिद्ध पत्रकार श्री कुलदीप नैयर ने पाकिस्तान को ''दूरस्थ पडोसी'' की संज्ञा दी है।

पाकिस्तान की ही तरह चीन के साथ भी भारतीय संबंध शत्रुतापूर्ण रहे है। निःसंदेह चीन के साथ भारत के संबंध अति प्राचीन है, जिनमें सांस्कृतिक, धार्मिक विविधता शामिल है किन्तु आज विभिन्न मुद्दों पर मुख्यताः सीमा विवाद को लेकर चीन के साथ भारतीय संबंध तनावपूर्ण है जिसके चलते सीमा पर तनातनी हो जाती है तथा 1962 में युद्ध भी हो चुका है। आज चीन भारत के साथ शत्रुता निभाने के लिए घेरे की नीति का अनुसरण कर रहा है जिसमें भारत के इर्द–गिर्द के देशों को अपने वन बेल्ट इनिशिएटिव का हिस्सा बनाकर एक ओर उन्हें अपने ऋण जाल में फंसा रहा है वहीं दूसरी ओर भारत को घेर रहा है। भारत इस नीति का हिस्सा नहीं है क्योंकि इसे वह अपनी सम्प्रभुता का हनन मानता है, इसके अलावा चीन पाकिस्तान को भी भारत के विरूद्ध सहायता मुहैया करता है। चीन के साथ मुख्य विवाद अक्साई चीन तथा तिब्बत को लेकर है। इसके अलावा यदि व्यापारिक संबंधों पर नजर डाले तो भारत व चीन का वर्तमान व्यापार अरबो डॉलर का है। चीन वर्तमान में भारतीय उत्पादों का तीसरा सबसे बड़ा निर्यात बाजार है वहीं चीन से भारत सबसे ज्यादा आयात करता है। चीन से भारत मुख्यतः इलेक्ट्रिक उपकरण, मेकेनिकल सामान, कार्बनिक रसायन आदि का आयात करता है। वहीं भारत से चीन को मुख्य रूप से खनिज ईंधन और कपास आदि का निर्यात किया जाता है।

पड़ौसी देशों में सबसे घनिष्ठ और आत्मीय संबंध भारत के नेपाल के साथ रहे है। नेपाल की पहचान एक हिन्दू राष्ट्र के रूप में है, यह सामाजिक संरचना, बोली–चाली, धर्म–अपासना से लेकर भौगोलिक दृष्टि तक भारत से जुड़ा है।

वर्तमान में चीन नेपाल में अपना प्रभाव पढ़ा रहा है वहीं नेपाल भी चीन को भारत का विकल्प बनाने की कोशिश कर रहा है क्योंकि नेपाल द्वारा चीन की वन बेल्ट परियोजना पर हस्ताक्षर करने के साथ ही तिब्बत से होकर नेपाल तक रेल लाईन बिछाने का समझौता भी चीन के साथ किया है वहीं चीन ने आने वाले वर्षों में नेपाल को तेल की आपूर्ति की भी घोषणा की है, इन समझौतों ने भारत और नेपाल के संबंधों में संशय की स्थिति उत्पन्न कर दी है। निःसंदेह भारत–नेपाल संबंध न केवल सांस्कृतिक रूप से मजबूत है बल्कि भौगोलिक कारण भी इन संबंधों को मजबूती प्रदान करते है लेकिन फिर भी इस बात पर भारत को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि कहीं नेपाल किसी अन्य देश के साथ मिलकर हमारे लिए परेशानी का सबक न बन जाए अतः भारत को तत्काल कूटनीती स्तर पर प्रभावशाली निर्णय लेने होगें।

नेपाल की ही तरह भूटान भी एक महत्वपूर्ण पडोसी देश है, जो कि एक स्थलरूद्ध एवं पर्वतीय देश है, जहाँ आज भी राजतन्त्रात्मक व्यवस्था कायम है। 1947 तक यह ब्रिटिश संरक्षित राज्य था जिसकी विदेश नीति का संचालन भारत के अधीन था। भारत–भूटान के मध्य 18 अगस्त 1949 को एक संधि हुई जिसके अनुसार दोनों सरकारों के मध्य स्थायी शान्ति और मैत्री कायम रहेगी। भारत ने भूटान के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत वहाँ की जल विद्युत संयंत्र, सीमेंट तथा सड़का निर्माण जैसी परियोजनाओं में संलग्न है। भूटान को विकासशील देशों से मिलने वाली आर्थिक सहायता का आधा अंश केवल भारत से ही मिलता है। सितम्बर 1971 में भारत के प्रयासों से ही भूटान संयुक्त राश्ट्र का 127वीं सदस्य बन सका। हाल ही में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भारत–भूटान के बीच सहयोग का एक नया खाका प्रस्तुत किया। प्रधानमंत्री ने घोषणा की कि अब जल–विद्युत क्षेत्र के अतिरिक्त अन्तरिक्ष, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसे नए क्षेत्रों में भूटान के साथ सहयोग किया जाएगा। अपनी भूटान यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री ने भूटान में 270 मेगावाट की मांगदेच्छु जलविद्युत परियोजना का भी उद्घाटन किया।

बांग्लादेश के निर्माण में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दिसम्बर 1971 भारत–पाक युद्ध के दौरान बांग्लादेश का निर्माण हुआ। भारत–बांग्लादेश की मैत्री का आधार 1972 में हस्ताक्षरित संधि है, जिसमें दोनों देशों ने शांति, प्रजातन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और राष्ट्रवाद का सम्मान करने की घोषणा की। इसी के साथ इसी वर्ष सम्पन्न हुई व्यापारिक संधि से दोनों देश लाभान्वित हुए है। वर्तमान में सीमा विवाद, जल विवाद, शरणार्थी समस्या एवं न्यूमूरे द्वीप जैसे मुद्दे तनाव का कारण बने है किन्तु दोनों देश मिलकर

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.201907

इसका निराकरण कर रहे है। हाल में बांग्लादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना ने भारत की अपनी चार दिवसीय (3–6 अक्टूबर 2019) सम्पन्न की। यह यात्रा भारत और बांग्लादेश के मध्य गहन द्विपक्षीय संबंधों को और बढ़ती परस्पर निर्भरता को दर्शाती है।

भारत–श्रीलंका के संबंध बहुत प्राचीन और सामान्यतः मैत्रीपूर्ण रहे है किन्तु श्रीलंकाई गृहयुद्ध के समय संबंध प्रभावित हुए थे। भारत श्रीलंका का एकमात्र पड़ौसी देश है। द.एशिया में दोनों की इच्छा एक उभयनिष्ठ सुरक्षा घेरा हिन्द महासागर में बनाने की है।

अफगानिस्तान मध्य एशिया का एक महत्वपूर्ण देश है। भारतीय साहित्य में इसका उल्लेख गंधार देश के रूप में आया है। ब्रिटिश काल में यह भारत से अलग कर दिया गया। वर्ष 2001 में अफगानिस्तान से तालिबानी सता की समाप्ति के बाद भारत के रूख में परिवर्तन महसूस किया गया है। भारत सरकार ने अफगानिस्तान को लेकर परस्पर सहयोग की नीति निर्धारित की है, भारत अफगानिस्तान के पुनर्निमाण के साथ ही साथ तकनीकी उन्नयन में भी सहयोग कर रहा है। यह दोनों देश दक्षेस के भी सदस्य है।

भारत और मालदीव के सम्बन्ध सामरिक, आर्थिक और सैन्य सहयोग पर आधारित करीबी व मैत्रीपूर्ण रहे है। हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने मालदीव की नई सरकार के गठन के बाद आधिकारिक यात्रा की जिस दौरान मालदीव सरकार ने उन्हें अपने देश का सर्वोच्च सम्मान ''रूल आफ निशान इज्जुद्दीन'' से नवाजा।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति सदैव ही ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के सिद्धान्त पर आधारित रही है। भारत ने समय पर तत्कालिक परिस्थितियों की मांग के अनुसार अपनी विदेश नीति का संचालन किया। फिर चाहे बात शीतयुद्ध के दौर में गुटनिरपेक्ष रहने की हो या पाकिस्तान से युद्ध कर स्वतन्त्र बांग्लादेश का निर्माण की भारत सदैव परिस्थितिनुरूप अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर सक्रिय रहा है और वर्तमान में भी विभिन्न मंचों पर आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों को उठाकर अपनी शान्ति प्रिय नीति का संचालन कर रहा है।

सन्दर्भ सूची

1. 'भारत और विश्व', दृष्टि, करेंट अफेयर्स टूडे, वर्ष 7, अंक 5, नवम्बर 2021.
2. पंत पुष्पेश, ''भारत की विदेश नीति'' टाटा मेक ग्रा हिल एज्यूकेशन प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, पृष्ठ 5–6.
3. अहीर राजीव (आईपीएस व अन्य), ''आधुनिक भारत का इतिहास'', स्पेक्ट्रम बुक्स, नई दिल्ली, पृष्ठ 732.
4. भारत एवं विश्व, क्रोनिकल, क्रोनिकल पब्लिकेशन्स, नोएडा (उ.प्र.), पृष्ठ 171.
5. 'अर्न्तराष्ट्रीय सम्बन्ध', दृष्टि, करेंट अफेयर्स टूडे, वर्ष –7, अंक –4, अक्टूबर 2021.

ISSN: 2456-0510
DOI: https://doi.org/10.24321/2456.0510.201907